

## हस्त-पत्रक

# खानपान की बदलती तस्वीर

### पाठ का सारांश

**खानपान का बदलता स्वरूप :-** दस पंद्रह वर्षों में खानपान की संस्कृति में काफी बदलाव आया है। दक्षिण भारत व उत्तर भारत के भोजन काफी हद तक पूरे देश में अपना स्थान बन चुके हैं। दक्षिण भारत का इडली-डोसा, बड़ा-सांभर-रस्म दक्षिण भारत में ही नहीं उत्तर भारत में भी पूर्णतया उपलब्ध है और उत्तर भारत के ढाबे व उनमें उपलब्ध रोटी-दाल साग पूरे देश में मिलेंगे। फ़ास्ट-फ़ूड का चलन भी कम नहीं। बर्गर व नूडल्स सभी स्थानों पर खाए-परोसे जाते हैं। आलू चिप्स, गुजराती ढोकला, गाठिया बंगाली मिठाइयाँ सब जगह सामान रूप से मिलने लगी हैं। सभी प्रदेशों के व्यंजन सभी स्थानों पर मिलने लगे हैं। जबकि पहले यही प्रान्त की विशेषता होते थे। ब्रेड जो पहले केवल अमीरों के घरों में ही आती थी अब वह कस्बे तक पहुँच चुकी है। ब्रेड नाश्ते के रूप में लाखों करोड़ों भारतीय घरों में सेंकी-तली जाती है।

**खानपान की बदलती संस्कृति से प्रभावित युवा-वर्ग :-** बदली संस्कृति के खानपान से नई युवा पीढ़ी काफी प्रभावित हुई है। यह वर्ग पहले ही स्थानीय व्यंजनों के बारे में कम जानता था लेकिन अब यह वर्ग नए व्यंजनों के बारे में अधिक जानता है। स्थानीय व्यंजन भी तो दिन-प्रतिदिन घटते जा रहे हैं जैसे :- छोले-कुलचे व पाव-भाजी आदि।

**खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता में अंतर :-** आज नए दौर में भले ही कुछ मशहूर चीजें अपना प्रभुत्व बनाए हैं। जैसे - मथुरा के पड़े, आगरे का पेठा व नमकीन आदि लेकिन उनकी गुणवत्ता उतनी नहीं रही और दूसरी ओर समयाभाव के कारण मौसम और ऋतुओं के अनुसार व्यंजन अब बनते ही नहीं।

**सुविधानुसार खानपान :-** शहरी जीवन की भागमभाग व महँगाई के कारण आज उन्हीं देशी-विदेशी व्यंजनों को अपनाया जा रहा है जिन्हें बनाने-पकाने की सुविधा हो। मेवों से भरे व्यंजन खाना हर आदमी के लिए संभव नहीं रहा क्योंकि महँगे मेवे हर कोई नहीं खरीद सकता।

**खानपान द्वारा निर्मित मिश्रित संस्कृति :-** देश-विदेश के व्यंजनों का चलन होने से खानपान की एक मिश्रित संस्कृति बनी है।

**खानपान से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा :-** खानपान की दृष्टि से सभी प्रान्त एक-दूसरे के पास-पास आए हैं। इससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिला है। इसे और बढ़ने के लिए हमें चाहिए की हम खाद्य पदार्थों के साथ-साथ एक-दूसरे की भाषा, बोली व वेशभूषा को भी जानने का प्रयत्न करें।

**स्थानीय व्यंजनों की दुर्गति :-** आधुनिकता की दुनिया की ओर बढ़ने के साथ-साथ हमें अपने स्थानीय व्यंजनों का बढ़ावा देना चाहिए। कई व्यंजन जो आम रूप में मिला करते थे वे पाँच सितारा होटलों में ही मिलने लगे हैं। उत्तर भारत की पूड़ियाँ, कचौड़ियाँ, जलेबियाँ व सब्जियों से बने समोसे अब बाजारों से गायब से होते जा रहे हैं। आधुनिकता के दौर में भी हम स्थानीय व्यंजनों को छोड़ते जा रहे हैं और पश्चिम के जो पदार्थ स्वाद, स्वास्थ्य और सरसता के लिए हैं उन्हें अपनाते जा रहे हैं। स्थानीय व्यंजनों का पुनरुद्धार अति आवश्यक है।

**खानपान की मिश्रित संस्कृति से वास्तविक स्वाद लुप्त :-** खानपान की मिश्रित संस्कृति से हम कई बार चीजों का वास्तविक स्वाद नहीं ले पाते। कई बार प्रीतिभोजों व पार्टियों (समारोहों) में एक ही प्लेट में विविध प्रकार के व्यंजन परोस लिए जाते हैं जिनसे किसी का स्वाद हम सही रूप में नहीं ले पाते। आज आधुनिकता के दौर में खानपान की मिश्रित संस्कृति बढ़ती जा रही है। हमारा कर्तव्य बनता है कि हम समयानुसार उसकी जाँच करते रहें।

## अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) उत्तर भारत में किस बात में बदलाव आया है?

उत्तर-

उत्तर भारत में खान-पान की संस्कृति में बदलाव आया है।

(ख) आजकल बड़े शहरों में किसका प्रचलन बढ़ गया है?

उत्तर-

आजकल बड़े शहरों में फ़ास्ट फूड चाइनीज नूडल्स, बर्गर, पीजा तेज़ी से बढ़ा है।

(ग) स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता में क्या फ़र्क आया है? इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर-

स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता में कमी आई है जिससे लोगों का आकर्षण कम हुआ है। इसका कारण है उन वस्तुओं में मिलावट किया जाना, जिनसे तैयार की जाती है।

(घ) मथुरा-आगरा के कौन-से व्यंजन प्रसिद्ध रहे हैं?

उत्तर-

मथुरा के पेड़े और आगरा का दलमोट-पेठा प्रसिद्ध है।

## लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) स्थानीय व्यंजनों के प्रसार को प्रश्रय कैसे मिली?

उत्तर-

आज़ादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों, तबादलों (स्थानांतरण) के कारण लोगों का एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाने से मिश्रित व्यंजन संस्कृति का विकास हुआ। उसके कारण भी खानपान की चीजें किसी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँची हैं।

(ख) खानपान संस्कृति का 'राष्ट्रीय एकता' में क्या योगदान है?

उत्तर-

खानपान संस्कृति का राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान है। खाने-पीने के व्यंजनों का प्रभाव एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में बढ़ता जा रहा है। उदाहरण के तौर पर उत्तर भारत के व्यंजन दक्षिण व दक्षिण के व्यंजन उत्तर भारत में अब काफ़ी प्रचलित हैं। इससे लोगों के मेलजोल भी बढ़ता जा रहा है जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

(ग) स्थानीय व्यंजनों का पुनरुद्धार क्यों ज़रूरी है?

उत्तर-

स्थानीय व्यंजन किसी न किसी स्थान विशेष से जुड़े हैं। वे हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। उनसे हमारी पसंद, रुचि और पहचान होती है। इसलिए भारतीय व्यंजनों का पुनरुद्धार आवश्यक है क्योंकि पश्चिमी प्रभाव के कारण अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। अतः इनको पुनः प्रचलित करने की आवश्यकता है।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) खानपान की नई संस्कृति का नकारात्मक पहलू क्या है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

लेखक का कहना है कि मिश्रित संस्कृति से व्यंजन का अलग और वास्तविक स्वाद का मज़ा हम नहीं ले पाते हैं। सब गड़मड़ हो जाता है। कई बार खानपान की नवीन मिश्रित संस्कृति में हम कई बार चीजों का सही स्वाद लेने से भी। वंचित रह जाते हैं, क्योंकि हर चीज़ खाने का एक अपना तरीका और उसका अलग स्वाद होता है। प्रायः सहभोज या । पार्टियों में हम

विभिन्न तरीके के व्यंजन प्लेट में परोस लेते हैं ऐसे में हम किसी एक व्यंजन का सही मजा नहीं ले पाते। हैं। स्थानीय व्यंजन हमसे दूर होते जा रहे हैं। नई पीढ़ी को इसका ज्ञान नहीं है और पुरानी पीढ़ी भी धीरे-धीरे इसे भुलाती जा रही है। यह खानपान की नवीन संस्कृति के नकारात्मक पक्ष हैं।

### **मूल्यपरक प्रश्न**

(क) आप खानपान में आए बदलावों को किस रूप में लेते हैं?

उत्तर-

खानपान में आए बदलावों को आधुनिक परिवर्तन के रूप में ले सकते हैं। अब गृहिणियों के पास स्थानीय व्यंजन पकाने के लिए समय नहीं है और प्रचुर मात्रा में वस्तुएँ। अब समय की बचत के लिए जल्दबाजी में काम करती है। अतः कम समय में तैयार होने वाले व्यंजन का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन मैं तथा कथित फास्ट फूड्स-नूडल्स पिज्जा बर्गर का पक्षपाती नहीं हूँ, क्योंकि इनके प्रयोग से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

### **अभ्यासार्थ प्रश्न :-**

प्रश्न-1 खानपान की मिश्रित संस्कृति ने युवाओं को किस प्रकार प्रभावित किया है?

प्रश्न-2 खानपान के मामले में स्थानीयता का क्या अर्थ है?

प्रश्न-3 खान - पान की नयी संस्कृति का राष्ट्रीय एकता में क्या योगदान है?

प्रश्न-4 देश में खानपान की संस्कृति में बदलाव के मुख्य कारण क्या हैं?

प्रश्न-5 पिछले दस पंद्रह वर्षों में हमारी खानपान की संस्कृति में क्या बदलाव आया है?

प्रश्न-6 'स्थानीय' व्यंजनों का पुनरुद्धार क्यों जरूरी है?

प्रश्न-7 स्थानीय व्यंजनों के प्रति लोगों का आकर्षण क्यों काम होता जा रहा है?

प्रश्न-8 खानपान का नकारात्मक पहलू क्या है? अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न-9 आप खानपान में आए बदलावों को किस रूप में लेते हैं?

प्रश्न-10 खानपान की विविध संस्कृति अपनाने में सजग रहने की आवश्यकता क्यों है?

प्रश्न-11 खानपान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का क्या मतलब है? अपने घर के उदाहरण देकर इसकी व्याख्या करें?

प्रश्न-12 खानपान में बदलाव के कौन से फ़ायदे हैं? फिर लेखक इस बदलाव को लेकर चिंतित क्यों है?

कस्तूर प्रकाश